गीता

अग्नि ३८१ (गीता सार का वर्णन), ३८२ (यम गीता : यम द्वारा नचिकेता को उपदेश),

कूर्म २.१+ (ईश्वर गीता का वर्णन), २.१२+ (व्यास गीता का वर्णन),

गणेश २.१३७.५७ (गणेश द्वारा राजा वरेण्य को गणेश गीता का उपदेश , गीता का आरम्भ),

गरुड १.२३९ (ब्रह्म गीता - सार का वर्णन),

पद्म ६.१७५+ (गीता के अध्यायों की शरीर के अङ्गों से उपमा, गीता अध्यायों के माहात्म्य का वर्णन),

भविष्य ३.४.२३.४० (गीता के अठारह अध्यायों तथा सप्तशती के चरित्रों से पवित्र पिण्ड के त्रिशताब्द स्थित रहने का उल्लेख),

महाभारत शान्ति १७७, १७८, २९०, २९९, आश्वमेधिक १३, १६, २०,

वराह ५१ (अगस्त्य गीता के अन्तर्गत परोक्ष ज्ञान द्वारा मोक्ष धर्म का निरूपण), ७४+ (रुद्रगीता के अन्तर्गत भुवन कोश का वर्णन),

विष्णु ३.७ (यम गीता का वर्णन),

विष्णुधर्मोत्तर १.५२+ (परशुराम के प्रश्न के उत्तर में शिव प्रोक्त शङ्कर गीता का वर्णन), ३.२२६+ (मुनियों के अनुरोध पर हंस रूपी नारायण द्वारा हंस गीता रूप में ज्ञानोपदेश का वर्णन),

स्कन्द २.४.२.४९ (कार्तिक मास में गीता पाठ से पाप मुक्ति का कथन), २.४.२.४९ टीका (गीता के तृतीय अध्याय के माहात्म्य के प्रसंग में जड ब्राह्मण

की मुक्ति की कथा), २.४.६.१९ (कार्तिक में गीता पाठ का निर्देश), ५.३.११.४६ (नन्दिगीता का वर्णन),

योगवासिष्ठ ५.८ (सिद्ध गीता का वर्णन), ६.२.३९+ (वसिष्ठ गीता का वर्णन), ६.२.१७३+ (ब्रह्मगीता का वर्णन),

लक्ष्मीनारायण १.२०.१५ (कुमारी रूपी महागीता की हरि से उत्पत्ति, माहात्म्य का वर्णन), २.९२+ (वासुदेव प्रोक्त गीता के अन्तर्गत आत्मा, जीव, मुक्ति, संसार, संसार - निमित्तक, मुक्ति साधन तथा विभूति निरूपण का वर्णन), २.२४९+ (लोमश गीता के अन्तर्गत अश्वपाटल नृपति द्वारा विविध प्रश्न, लोमश ऋषि द्वारा प्रदत्त उत्तरों का वर्णन), ३.४०+ (वधू गीता के अन्तर्गत स्त्रियों हेतु श्रीकृष्ण नारायण उपदिष्ट गृह - धर्म का निरूपण), ४.९+ (बालयोगिनी गीता के अन्तर्गत पुत्री रूपा बालयोगिनी द्वारा माता रूपा सुरेश्वरी को ब्रह्मभाव, भगवत्प्राप्ति, दास्य से नारायणी स्वरूपता प्राप्ति आदि का निरूपण), ४.८६+ (गृह गीता के अन्तर्गत कृष्ण नारायण द्वारा कर्मपरायण तथा कामधर्मपरायण गृहस्थों के भी कृष्णाज्ञा परायण होकर परम पद प्राप्ति का निरूपण) ;

द्र. ब्रह्मगीता, वसिष्ठगीता, सिद्धगीता । **geetaa/gita**